Devi Baglamukhi Hridaya Stotram

देवी बगलामुखी हृदय-स्तोत्र

Sumit Girdharwal

9410030994, 9540674788

sumitgirdharwal@yahoo.com

www.yogeshwaranand.org

www.baglamukhi.info

किसी भी देवी या देवता से सम्बन्धित हृदय-स्तोत्र देवता का हृदय ही होता है। यह स्तोत्र भगवती बगलामुखी से सम्बन्धित है। उनके हृदय में बस जाना या फिर उन्हें अपने हृदय में बसा लेना – ये दोनों ही विकल्प इस पाठ का उद्देश्य हैं। उनके हृदय में निवास कर पाना तो एक स्वप्न मात्र ही है, क्योंकि इसके लिए तो परम शक्तिमान भी लालायित रहते हैं। हां, हमारी भक्ति के प्रसाद-स्वरूप यह फल अवश्य मिल सकता है कि ये विश्वाश्रय हमारे हृदय में बस जाएं और वास्तव में जीवन का यही तो लक्ष्य है; तभी तो हमारा उद्धार सम्भव है।

'हृदय-स्तोत्र' के द्वारा भगवती बगला की कृपा प्राप्त करने हेतु एक विशिष्ट प्रयोग है। आश्विन मास की महा-अष्टमी के दिन पीताचारी, पीताहारी होकर किसी प्राचीन शिवालय अथवा शक्तिपीठ में इस हृदय-स्तोत्र का अनुष्ठान संकल्प लेकर करें। इस प्रकार इस स्तोत्र का पाठ करने से मां पीताम्बरा की कृपा प्राप्त होती है और साधक के शत्रु पराभव को प्राप्त होते हैं। (यह अनुभूत प्रयोग है) बगला-हृदय-स्तोत्र वास्तव में साधक के लिए 'वाञ्छाकल्पद्रुम' के समान है। यूं तो इस पाठ के विषय में कुछ भी कहना सूर्य को दीपक दिखाने के समान ही होगा, तो भी सामान्यतः कुछ विशिष्टताओं को स्पष्ट करना यहां उचित प्रतीत होता है, यथा–

1. यदि मात्र बगला-हृदय-स्तोत्र का ही पाठ कर लिया जाए तो फिर साधक को जप आदि अथवा अनुष्ठान की कोई आवश्यकता नहीं रहती।
2. इस पाठ के स्मरण-मात्र से ही साधक के सभी अभीष्ट पूर्ण हो जाते हैं।
3. इस स्तोत्र का पाठ करने वाले के लिए इस पृथ्वी पर कुछ भी अप्राप्य नहीं रह जाता है– **न किंचिद् दुर्लभं तस्य दुष्यते जगतीतले**।
4. इस स्तोत्र का तीनों समय पाठ करने के प्रभाव से गूंगा बोलने लगता है, पंगु चलने लगता है, दीन सर्वशक्तिमान हो जाता है; घोर दरिद्र व्यक्ति धनवान हो जाता है; चारों ओर से निन्दित व्यक्ति भी ख्याति प्राप्त कर लेता है; और मूर्खतम व्यक्ति की वाणी में ओज एवं कवित्व की शक्ति आ जाती है।
5. इस स्तोत्र के पाठ में ध्यान आदि आवश्यक नहीं है। जप, होम, तर्पण आदि की भी कोई आवश्यकता नहीं है–

न ध्यानं न च होमश्च न जपो न च तर्पणम्।

सुकृदुच्चाणान्मन्त्रं चिन्तितं च भवेद् ध्रुवम्।

Sumit Girdharwal Ji & Sri Yogeshwaranand Ji
+91-9540674788, +91-9917325788 Email : shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info , www.yogeshwaranand.org

6. इस स्तोत्र-पाठ के पाठी का उल्लंघन करने मात्र से स्वयं ब्रह्मा भी सकुशल नहीं रह सकते। यह स्तोत्र परम संतोष-प्रदायक एवं सिद्धियां प्रदान करने वाला है, क्योंकि यह साक्षात् मां बगला का हृदय है।

भगवती बगला के इस हृदय स्तोत्र से प्राप्त होने वाले अनेक परिणामों के विषय में मेरा सुखद अनुभव रहा है। इसलिए मैं ऐसे पाठकों/साधकों को भी इस स्तोत्र का अनुष्ठान करने का परामर्श दूंगा, जो सब तरफ से निराश हो चुके हैं और जिनको कोई भी रास्ता स्पष्ट नहीं होता। उनसे मैं निवेदन करूंगा कि संकल्प लेकर कम से कम ग्यारह सौ स्तोत्रों का अनुष्ठान अवश्य करें।

(केवल बगलामुखी में दीक्षित साधक ही इसका पाठ करें)

विनियोग : ॐ अस्य श्री बगलामुखी हृदयमालामन्त्रस्य नारदः ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्री बगलामुखी देवता ह्लीं बीजं क्लीं शक्तिः ऐं कीलकं श्रीबगलामुखी-वर-प्रसाद-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास : ॐ नारद ऋषये नमः शिरसि। ॐ अनुष्टुप् छन्दसे नमो मुखे। ॐ श्री बगलामुख्यै देवतायै नमः हृदये। ॐ ह्लीं बीजाय नमो गुह्ये। ॐ क्लीं शक्तये नमः पादयोः। ॐ ऐं कीलकाय नमः सर्वांगे।

करांग-न्यास : ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ऐं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्लीं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास : ॐ ह्लीं हृदयाय नमः। ॐ क्लीं शिरसे स्वाहा। ॐ ऐं शिखायै वषट्। ॐ ह्लीं कवचाय हुं। ॐ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐं अस्त्राय फट्। ॐ ह्लीं क्लीं ऐं इति दिग्बंधः। (अन्तिम वाक्य बोलते समय अपने चारों ओर चुटकी बजाएं।)

ध्यान :

पीताम्बरां पीतमाल्यां पीताभरणभूषिताम्।

पीतकञ्चपदद्वन्द्वां बगलां चिन्तयेऽनिशम्॥

इस प्रकार ध्यान करके प्रार्थना करें–

पीतशंखगदाहस्ते पीतचन्दनचर्चिते।

बगले मे वरं देहि शत्रुसंघविदारिणि॥

इस प्रकार प्रार्थना करके निम्नांकित मन्त्र का यथा-शक्ति जप करें–

जप-मन्त्र : "ॐ ह्लीं क्लीं ऐं बगलामुख्यै गदाधारिण्यै प्रेतासनाध्यासिन्यै स्वाहा।"

इस मन्त्र का यथा-शक्ति (कम से कम एक माला) जप करने के उपरान्त पुनः पूर्ववत् हृदयादि, षड्ंगन्यास करें। तद्पोरान्त अधोलिखित स्तोत्र का पाठ करें, यथा–

स्तोत्र

वन्देऽहं बगलां देवीं पीतभूषणभूषिताम्।

तेजोरूपमयीं देवीं पीततेजः स्वरूपिणीम्॥१॥

गदाभ्रमणभिन्नाभ्रां भृकुटीभीषणाननाम्।

भीषयन्तीं भीमशत्रून् भजे भव्यस्य भक्तिदाम्॥२॥

पूर्णचन्द्रसमानास्यां पीतगन्धानुलेपनाम्।

पीताम्बरपरीधानां पवित्रामाश्रयाम्यहम्॥३॥

पालयन्तीमनुपलं प्रसमीक्ष्याऽवनीतले।

पीताचाररतां भक्तास्ताम्भवानीं भजाम्यहम्॥४॥

पीतपद्मपदद्वन्द्वां चम्पकारण्यरूपिणीम्।

Sumit Girdharwal Ji & Sri Yogeshwaranand Ji
+91-9540674788, +91-9917325788 Email : shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info , www.yogeshwaranand.org

पीतावतंसां परमां वन्दे पद्मजवन्दिताम्॥५॥

लसस्चारुसिञ्जत्सुमञ्जीरपादां चलत्स्वर्णकर्णावतं साञ्चितां स्याम्।

वलत्पीतचन्द्राननां चन्द्रवन्द्यां भजे पद्मजादीऽयसत्पादपद्माम्॥६॥

सुपीताभयामालया पूतमन्त्रं परं ते जपन्तो जयं संलभन्ते।

रणे रागरोषाप्लुतानां रिपूणां विवादे बलाद्वैर्कृताघातमातः॥७॥

भरत्पीतभास्वत्प्रभाहस्कराभां गदागञ्जितामित्र गर्वां गरिष्ठाम्।

गरीयो गुणागारगात्रां गुणाढ्यां गणेशादिगम्यां श्रये निर्गुणाढ्याम्॥८॥

जना ये जपन्त्युग्रबीजं जगत्सु परं प्रत्यहं ते स्मरन्तः स्वरूपम्।

भवेद् वादिनां वाङ्मुखस्तम्भ आद्ये जयो जायते जल्पतामाशु तेषाम्॥९॥

तव ध्याननिष्ठाप्रतिष्ठात्मप्रज्ञावतां पादपद्मार्चने प्रेमयुक्ताः।

प्रसन्ना नृपाः प्राकृताः पण्डिता वा पुराणादिका दासतुल्या भवन्ति॥१०॥

नमामस्ते मातः कनककमनीयाङ्घ्रिजलजं

बलद्विद्युद्वर्णां घनतिमिर विध्वंसकरणम्।

भवाब्धौ मग्नात्मोत्तरण करणं सर्वशरणम्

प्रपन्नानां मातर्जगति बगलेदुःखदमनम्॥११॥

ज्वलज्ज्योत्सना रत्ना करमणिविषक्तांक भवनं

स्मारामस्ते धाम स्मरहर हरीन्द्रेन्दुप्रमुखैः।

अहोरात्रं प्रातः प्रणयनवनीयं सुविशदम्

परं पीताकारं परिचित मणि द्वीपवसनम्॥१२॥

वदामस्ते मातः श्रुतिसुखकरं नाम ललितं

लसन्मात्रावर्णं जगति बगलेति प्रचरितम्।

चलन्तस्तिष्ठन्तो वयमुपविशन्तोऽपि शयने

Sumit Girdharwal Ji & Sri Yogeshwaranand Ji
+91-9540674788, +91-9917325788 Email : shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info , www.yogeshwaranand.org

भजामो यच्छ्रेयो दिवि दुरवलभ्यं दिविषदाम्॥१३॥

पदार्चायां प्रीतिः प्रतिदिनमपूर्वा प्रभवतु
यथा ते प्रासन्न्यं प्रतिपलमपेक्ष्यं प्रणमताम्।
अनल्पं तन्मातर्भवति भृतभक्त्या भवतु नो
दिशातः सद्भक्तिं भुवि भगवतां भूरि भवदाम्॥१४॥

मम सकलरिपूणां वाङ्मुखे स्तम्भयाशु
भगवती रिपुजिह्वां कीलय प्रस्थतुल्याम्।
व्यवसित खलबुद्धिं नाशयाऽशु प्रगल्भाम्
मम कुरु बहुकार्यं सत्कृपेऽम्ब प्रसीद॥१५॥

व्रजतु मम रिपूणां सद्मनि प्रेतसंस्था
करधृतगदया तान् घातयित्वाऽशु रोषात्
सघनवसनधान्यं सद्म तेषां प्रदह्य
पुनरपि बगला स्वस्थानमायातु शीघ्रम्॥१६॥

करधृतरिपुजिह्वापीडनं व्यग्रहस्ताम्।
पुनरपि गदया तांस्ताडयन्तीं सुतन्त्राम्
प्रणतसुरगणानां पालिकां पीतवस्त्रां
बहुबलबगलान्तां पीतवस्त्रां नमामः॥१७॥

हृदयवचनकायैः कुर्वतां भक्तिपुञ्जं
प्रकटति करुणार्द्रां प्रीणति जल्पतीति।
धनमथ बहुधान्यं पुत्र पौत्रादिवृद्धिः
सकलमपि किमेभ्यो देयमेवं त्ववश्यम्॥१८॥

तव चरणसरोजं सर्वदा सेव्यमानं

द्रुहिणहरिहराद्यैर्देववृन्दैः शरण्यम्।
मृदुलमपि शरं ते शर्मदं सूरिसेव्यं
वयमिह करवामो मातरेतद् विधेयम्॥१९॥

फलश्रुति

बगला हृदयस्तोत्रमिदं भक्तिसमन्वितः।
पठेद् यो बगला तस्य प्रसन्ना पाठतो भवेत्॥२०॥
पीताध्यानपरो भक्तो यः शृणोत्यविकल्पतः।
निष्कल्मषो भवेन्मर्त्यो मृतो मोक्षमवाप्नुयात्॥२१॥
आश्विनस्य सिते पक्षे महाष्टम्यां दिवानिशम्।
यस्तिवदं पठते प्रेम्णा बगलाप्रीतिमेति सः॥२२॥
देव्यालये पठेन्मर्त्यो बगलां ध्यायतीश्वरीम्।
पीतवस्त्रावृतो यस्तु तस्य नश्यन्ति शत्रवः॥२३॥
पीताचाररतो नित्यं पीतभूषां विचिन्तयन्।
बगलायाः पठेन्नित्यं हृदयस्तोत्रमुत्तमम्॥२४॥
न किञ्जिद्दुर्लभं तस्य दृश्यन्ते जगतीतले।
शत्रवो ग्लानिमायान्ति तस्य दर्शनमात्रतः॥२५॥

(श्री सिद्धेश्वर तंत्रे उत्तरखण्डे बगलापटले श्री बगलाहृदयस्तोत्रं समाप्तम्)

Sumit Girdharwal Ji & Sri Yogeshwaranand Ji
+91-9540674788, +91-9917325788 Email : shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info , www.yogeshwaranand.org

Our Books

Sri Baglamukhi Tantram – Rs 400/=

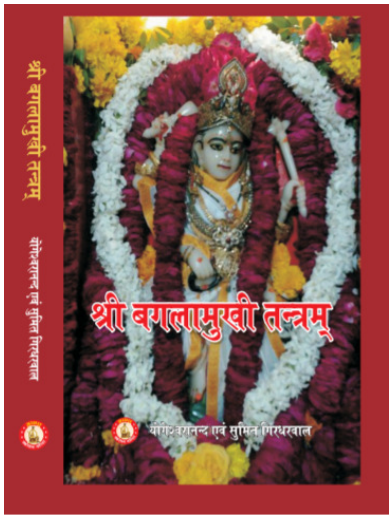

Shodashi Mahavidya (Tripurasundari Sadhana Sri Yantra Pooja) - Rs 370/=

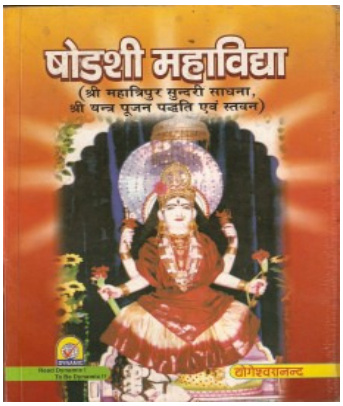

Sumit Girdharwal Ji & Sri Yogeshwaranand Ji
+91-9540674788, +91-9917325788 Email : shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info , www.yogeshwaranand.org

Shatkarma Vidhaan Rs – 380/=

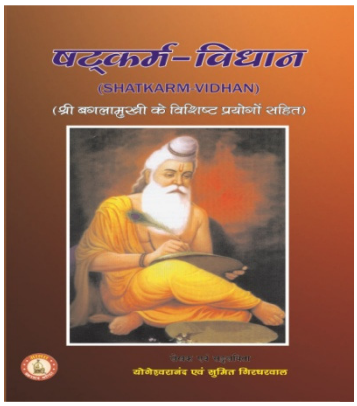

Agama Rahasya Rs – 500/=

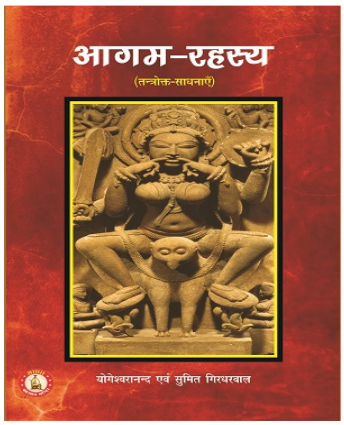

Sri Pratyangira Sadhana Rahasya – Rs 400

Sumit Girdharwal Ji & Sri Yogeshwaranand Ji
+91-9540674788, +91-9917325788 Email : shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info , www.yogeshwaranand.org

Mantra Sadhana Rs – 280/=

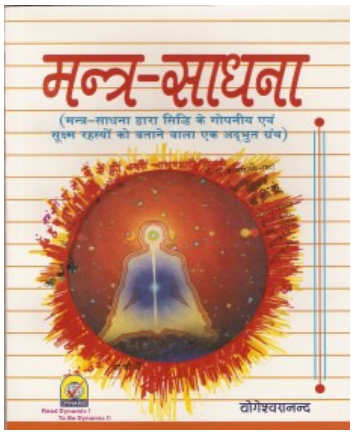

Baglamukhi Sadhana Aur Siddhi Rs – 350/=

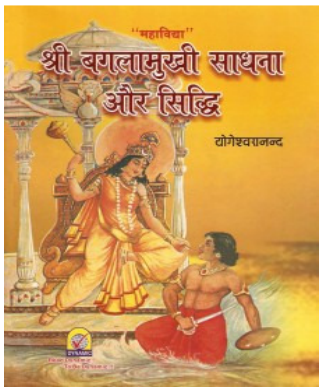

If you want to purchase any of our book then please deposit respective amount in below a/c –

Sumit Girdharwal

Axis Bank

912020029471298 (Current A/C)

IFSC Code – UTIB0001094

And send the receipt to our email sumitgirdharwal@yahoo.com or whatsapp +91-9540674788

Sumit Girdharwal Ji & Sri Yogeshwaranand Ji

+91-9540674788, +91-9917325788 Email : shaktisadhna@yahoo.com

www.baglamukhi.info , www.yogeshwaranand.org